समकालीन हिंदी कविता का प्रतिपाद्य

प्रो० मृत्युंजय उपाध्याय

"कविता है कवि हृदय क्षितिज में बालारूण का आना/जीवन की प्राची में उठकर मधुर-मधुर मुस्काना" (गोपालशरण सिंह नापाली) के साथ इस वर्ष की कविता का विवेचन होता है |'इसी से बचा जीवन राकेश रेणु की कवितायेँ जीवन के प्रति उनकी दृष्टि और उत्कट आवेश के प्रस्थान बिंदु से चलकर आज के इस अँधेरे समय में रौशनी बांटती है' |

'सपने में' कविता के द्वारा वह अपने राम राज्य की कल्पनाओं का अनावरण करते हैं |एक पुत्र के रूप में पिता की स्मृति को इस तरह से अनुभूत करना विह्वल बना देता है (पिता के लिए) यों हिंदी साहित्य में माता पर असंख्य कविताएँ लिखी गई पर पिता पर कम | वहां कुछ कविताएँ हैं तो अनुभूति के स्तर पर पिता से उतना गहरा रिश्ता नहीं बना पातीं |यहाँ पिता-पुत्र-संबंधों में निहित अतीत और वर्त्तमान एक साथ साकार हो उठता है :

"मरने बुझने नहीं दूंगा उसे/मेरे साथ-साथ जियेगा वह" |कुछ कविताएँ मानवीयता और प्रेम की तलाशी हैं और प्रेम को सर्वोपरी मानती हैं |

"कुछ भी इतना महत्वपूर्ण नहीं, जितनी प्रतीक्षा प्रियतम के संवाद की संस्पर्श की, मुस्कान की प्रतीक्षा" |

स्त्री के बारे में कवि का नज़रिया मैत्री कई है |दोनों के मध्य मैत्री ही महत्वपूर्ण होती है |यही वह तत्व है, जो दोनों को घर, परिवार और समाज में बराबरी का दर्जा देता है |समानता का हक दिलाने के लिए संघर्ष करती यह कविता सर्वत्र विद्यमान है : "मेरी हर दौड़ में

शामिल हो तुम/तुम्हारे साथ होऊँगा मैं भी सदा सर्वदा/तुम्हारी प्रतिच्छाया-सा" |

महेश आलोक की कविताएँ मेरा 'बेटा बड़ा हो रहा है', 'लौटते हैं अपने युवा दिनों की तरफ', 'विस्मरण' और 'एक अच्छा दिन' विचारणीय हैं | कवि को विश्वास है कि उनका बेटा बड़ा हो रहा है | कारण वह संदेह करने लगा है | डेकार्ड का प्रसिद्द कथन उन्हें याद आ रहा है कि संदेह है, इसलिए व्यक्ति का व्यक्तित्व है अथवा सब शून्य है | उनका बेटा बड़ा हो गया है | प्रतिवाद की सब कला सीख गया है | पिता कितनी ही बार हार चुके हैं उससे बहस में | इसलिए कि उसे अपनी विद्धता पर संदेह नहीं है |

मोहन कुमार डहेरिया की कविताएँ 'धन्यवाद', 'ओ शब्द', 'कहना मत', 'नहीं दूँगा अपना दुःख किसी को' पर भी विचार किया जा सकता है | ध्वन्यालोक में यह चर्चा है कि पहली बार जब शब्दागम हुआ तो लोग सारा अन्धकार विलीन हो गया | सब कुछ साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा | शब्द ही मुक्त करते हैं | कवि का उद्गार है कि क्या नहीं किया उन्होंने मुक्ति पाने के लिए | शराब पी, छककर चित्र बनाए, कविताएँ लिखीं | डॉक्टर-दर-डॉक्टर के घर भटका पर सारे प्रयत्न व्यर्थ गए | कवि को शब्द की अनंत शक्ति पर अशेष विश्वास है कि वह वर्षों तक एक जोंक के चुंबन पाश में ऐसा रहा कि जहाँ जहाँ बच्चों, पत्नी के शरीर पर रखता हाथ, वहाँ वहाँ उग आते फफोले | शब्दागम ने सारा संकट, संशय, ऊहापोह दूरकर दिया : "धन्यवाद औ शब्द तूने मुझे मुक्त किया/एक विस्फोटक जुनूनी चाल से/धुआँ-धुआँ जिंदगी से मुक्त किया" |

(समकालीन भारतीय साहित्य, जून-अगस्त २०१९, पृ. 43 |

राजेन्द्र प्रसाद पांडेय की कविताएँ 'साइकिल', 'काम पूरा होने की ख़ुशी', 'लौटाने का क्षण', और 'वह एक पेड़' भी विचारणीय है |पक्षी चहकते हैं जिस प्रकार अपने-अपने धरौंदों में, वैसे ही वह लौट रहा है घर काम पूरा होने की ख़ुशी में |पक्षी और कवि दोनों आनंदमगन हैं |काम पूरा होने की ख़ुशी उनमें समा नहीं पा रही है |मनुष्य के पास कितनों का रहता है ऋण |उसे चुकाना चाहे तो कई जन्म लग जाएँ |

मिथिलेश श्रीवास्तव की कविताएँ 'और जब सपनों की याद आई', 'पास-पास चीज़ें', 'तकलीफ में देखकर मन रोता है', विचारणीय है | बढ़ती उम्र जैसे-जैसे दस्तक देती है, यथार्त और नग्न सत्य का बोध होने लगता है |यहाँ पता चलता है सुख-दुःख प्रकृति के दो छोर हैं, दिन-रात की तरह |मनुष्य लोगों की शान शौकत, शाहखर्ची देखकर अपनी विवशता, दीनता को कोसता है :

"टीवी पर किसी अंबानी की बेटी की शादी के दृश्य चल रहे थे/इन मजबूर और खाली बेसहारा हाथों से अनजान" |

प्रधानमन्त्री ने स्वच्छता का व्यापक अभियान चलाया है तो कई संस्थाएं, प्रकल्प इस ओर तीव्र गति से प्रयाण कर रहे हैं |प्रो० सी० वी० श्रीवास्तव विदग्ध की कविता 'बनाएँ स्वच्छ परिवेश' घ्यातव्य है : "दूषित है जलस्रोत नदी तालाब कुँए व झरने/धरती हवा गगन मैले जो शुद्ध हमें हैं करने" |

पूजा कौशिक इसलिए प्रसन्न है कि वह देख रही है कि उपांत के लोगों, जहालत, गरीबी की ज़िन्दगी जीने वालों के चेहरे पर प्रसन्नता है |मूक, बधिर, दिव्यांग के जीवन में सबेरा आया है |वहाँ प्रसन्नता

समा नहीं पा रही है : "साथ पढ़ेंगे |न कोई बड़ा न छोटा होगा, शेष रह गया जिनमें कुछ भी/विशेष वही हर बालक होगा" |

आत्मा की पुकार : श्रीकांत चौधरी में कवि सर्वत्र स्वच्छता, शुचिता का आह्वान करते हैं |इस दिशा में उन्हें बाबा अंबेडकर की याद आ जाती है |महात्मा गांधी स्मरण होता है:

"ईश्वर हो, प्रभु खुदा हो, पूजा हो, प्रार्थना हो, या इबादत जरूरी है, घर-बाहर हरदम सफाई की आदत" |

स्वच्छता, शुचिता ही प्रभु की ओर ले जाती है |यही स्वच्छता प्रभु की पर्याय बन जाती है |'सिद्धकाम' (डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय) में कवि अपने उद्देश्य की सिद्धि हेतु सारा मार्ग तलाशा है, नहीं पड़ता किसी मृगमरीचिका में |अंत में सिद्धकाम तब होता है जब "तलाशता है बीहड़ से बीहड़ मार्ग |जिसपर चलना मौत से लड़ना है |पर एक दिन वही मुकाम पाता है |जग में सिद्धकाम कहलाता है" |डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन की कविताएँ 'राम के नाम पर', 'स्वीकार कर लो' विचारणीय हैं |कवि को चिंता है कि राम के प्रति न उनमें भक्ति है, न उनके प्रति कोई आत्मीयता, लगाव |वे कर रहे हैं आघात भारत पर, वे कर रहे हैं धंधे भगवान् के नाम पर |अंत में कवि राम पर ही सारा निर्णय छोड़ देते हैं :

"हे राम बतलाओ उन्हें/तुम कहाँ रमते नहीं/जो कर रहे दंगे तुम्हारे/नाम पर थामते नहीं" |

जसवीर चावला की दो कविताएँ प्रेरक हैं |'बुरेहाल पत्ते-किताबें-कलमें-जूते' और 'धुपते हवा में पढ़ती गोरी' |कलमों का यह पराक्रम है कि अनंत ऊर्जा समाई है उनमें उनके आकार कैसे भी हो- "नित नए आकारों रिफिलों/लंबे छोटे रूपों में तिल मिलाते/हालांकि कितनी ऊर्जा समाए/कोई चला देखे/हज़ारों तलवारों के दम निकले" |दूसरी कविता

में धूप गौरी को पढ़ने बैठती है तो गौरी धूप के | अच्छा खेल है यह पढ़न-पढ़ाने का | धूप ने उसे पढ़ा भर था | हवा उसे सुन पाई थी | यह खेल शायद चलता रहेगा और धूप-हवा गौरी को समझती रहेगी |

आनंद तिवारी पौराणिक की कविता 'बबूल वाले गाँव' में अतीत चिंतन होता है | गाँव की भूली विसरी यादों को सहलाते हुए दुलराते हुए | वह स्वर्णिम अतीत लौटाया तो नहीं जा सकता पर यादों की जुगाली तो हो सकती है :

"दुखों से भर गए, खलिहान खेत/क्षत-विक्षत है झोपड़ी, बुझे हुए अलाव" | सारा तामझाम मिट गया | पारस्पारिकता की उषणता बेगानेपन में ढल गई : "अपनों का इतना दुराव | सुकून के | तलाशते बबूलवाले गाँव" |

गुलाब खंडेलवाल की ग्रंथावली से यहाँ दो कविताएँ संकलित हैं- 'पंछी उड़ जायेंगे' और 'दृष्टि किसी उन्नायक की' | इनमें आशा, विश्वास, उमंग के दर्शन होते हैं | कभी जो अमृतबीजवपन हुआ था | वह पृथ्वी में सोया पड़ा है परंतु एक दिन जब वह फूल बनेंगे, पृथ्वी मुग्ध हो जाएगी | पक्षी उड़-उड़कर, वहाँ आएँगे | बहुत समय तक वे वहां मंडराएंगे | उनकी दूसरी कविता 'दृष्टि किसी उन्नायक की' में साड़ी संभावनाओं और क्षमताओं के बावजूद उन्हें विकास का भरपूर अवसर नहीं मिला | इसे भाग्य की विडंबना कही जाए या कृत्रिम बाधा :

"मिला मुझे तुझसे जो, झूठे थे सब उसके आगे क्या यदि आत्महीनता के भी कभी मन में जागे" |

सरन घई की दो कविताएँ हैं- "रुको पथिक विश्राम तनिक लो' और 'विदेश में होली' | जब मार्ग में बाधाएं रोकने लगे, विपदाएँ अस्त-व्यस्त कर दें, पग-प्रति-पग पथ गतिमान रहे, तब पथिक धर्म का मर्म समझकर पथिक को तनिक रुकना है, तनिक विश्राम कर लेना है |

मंज़िल पाना धर्म है |यही सत्य भी है |इसी से प्रेरित होकर चलते जाना है |एक दिन मंजिल आ जाएगी |कवि को विदेश में होली खेलने का मलाल है क्योंकि यहाँ भारत जैसा रंगीन, आनंददायक माहौल कहाँ है |न मिलती है पत्नी से लिफ्ट न मोहल्लेवाली से |पड़ोसन हाथ नहीं आती, न शाली ही-फिर होली का भला लाभ क्या है | बेहतर है फेसबुक की तरह ओपन होली का प्रबंध किया जाए :

ऐसी होली का क्या लाभ, इसे बंद करो

फेसबुक की तरह ओपन होली का प्रबंध करो |

इब्बार रब्बी ने 'बोतल ब्रश' के बहाने अज्ञेय की काव्यकृतियों का स्मरण किया है |अज्ञेय ने कवि द्वारा एक फूल के बारे में पूछने पर बताया बोतल ब्रश | फिर क्या था इस कवि की 'हरी घास पर क्षण भर' 'कितनी नावों में कितनी बार' 'ओ यायावर रहेगा याद' आदि की याद आने लगी |कवि ने 'शुभ विवाह' की महत्ता को पंख लगा दिया | उनका विवाह क्या हुआ, सुख स्वप्नों के सारे मार्ग खुल गए | फूलों फलों का आशीर्वाद सहस्त्र गुणा होकर फलित हो गया |अंतिम पारा उद्धृत कर कवि के अभिप्राय तक पहुँचता हूँ :

"मन हरा होने लगा कमरा अब 'घर' होने लगा/अकेला था दोगुना हुआ तिगुना होकर मुस्कुराया/दस वर्ष बाद हम चित्र हैं सहचर है सखा हैं" |

'पानी के मकान', 'चलता हूँ', 'कैंसर' भी रामानेवाली प्रेरणापद कविताएँ हैं |

इसी अंक में शिवप्रसाद जोशी की तीन कविताएँ हैं 'पहाड़ की एक मृतात्मा के लिए', 'आछरिया' और 'ख्याल' |कवि को पहाड़ से कितना अनुराग है, लगाव है कि "सवाल नहीं हैं डर है/अचानक मृत्यु पर/एक

विलाप फैला हुआ है आग की तरह/रह-रहकर चमकते लड़की के बुन्दके/चांजी गाड के इस पहाड़ पर" |

युसुफ सईद और अशोक पांडे के लिए समर्पित हैं 'ख्याल दर्पण' | एक विख्यात मेजबानी से गुजर रही है राइन किनारों की वाइन | संगीत के भूगोल से होकर गुजरता है कैमरा | रोशनआरा बेगम की तानों पर अटकी हुई पतंग | एक आलाप मंडरा रहा है, घरानों के खंडहरों पर | इस ठिठके हुए वक्त में आलिया रशीद के ध्रुपद का आकार पाकिस्तान और हिन्दुस्तान से भी बड़ा है जैसे एक ठिठका हुआ वक्त |

लीलाधर जगूड़ी की तीन कविताएँ हैं 'मधुमती' (मई २०१९) में | 'शून्य का सूनापन', 'भूगोल की हवाएँ' और 'खेल-खेल में'/कवि सोचता है कि पृथ्वी पर क्या कोई ऐसी जगह हो सकती है जहाँ शून्य नहीं हो/जो भी खाली जगह है, जहाँ है, जितनी है, वही शून्य काम का है | रेल, हवाई जहाज और बसों के लए वही शून्य काम का है | पृथ्वी के लिए और मनुष्यों के लिए भी | इन्हीं खाली जगहों को जोड़कर बनता है महाशून्य | शब्दों और ध्वनियों की तरंगे हमें शून्य का धनी बना देतीं हैं | भूगोल की हवाएँ सौवी मंजिल पर भी अपनी जमीन, अपना आसमान ढूंढ लेती हैं | उनकी उड़ान देखकर पूरे दृश्य में खुशबुओं के पर निकल जाते हैं | अपनी जगह रहकर भी उड़ जाते हैं फूल |

लाल्टू की पांच कविताएँ प्रेरणाप्रद हैं | क्या अजीब संयोग है कि वह उसे बाँध रखना चाहती थी और वह उसे पंखुड़ियों सा खोल रखना चाहता था | वृक्ष के पत्तों की सिंहरण सी वह उसे देख लेना चाहती थी हरपल, हर हाल में | वह उसे धरती पर खुला छोड़ने के लिए बेताब है उतना ही, जितना वह उससे बाँध रहना चाहता था |

राजकुमार कुंभज को चिंता है कि भले ही नहीं बदला देश का भूभाग परन्तु असंख्य टुकड़ों में बदल गया है हमारा समय, हमारा आज/पानी

नहीं बदला, नहीं बदला उसका आचरण परंतु असंख्य टुकड़ों में बदल गया हमारा राज |यह विधि की विडंबना है या मनुष्य की साज़िश| मनुष्य-मनुष्य को बाँटकर उसपर राज करने की साज़िश |मनुष्यता के शव पर वसंत मनाने की साज़िश |

कवि ने निजीकरण की खामियों की ओर संकेत किया है कि इसमें सभी छले गए |पारस्पारिकता में सेंध लग गई |अब कोई किसी को नहीं पूछता हाल समाचार |हिरोशिमा और नागासाकी के बीच, चीखती-पिकारती लाशों के बीच, वस्तियों-श्मशानों की खामोशी के बीच, वर्ण, वर्ग और पेशवाई अधर्म ब्रीच आखिर अब बचा क्या है |विवशता, नाश, पराजय और हम निजीकरण की बाज रहे हैं डफली |

रमेश हर्ष को इससे व्याकुलता है कि पहाड़ से होकर गुजरती है सड़कें तो लगता है पहाड़ का गला रेत दिया गया हो |पहाड़ के पिता होने का भी अहसास है उन्हें |आज जो कुछ बिखर गया, कल सहेजा जाएगा जब पहाड़ पिता है |चन्द्र कुमार को चिंता है कि पत्थर की मूर्ती टूट गई तो उसका सब कुछ लूट गया |कैसे बचा पाएगी वह अपने ईश्वर को |

मधुमती के अप्रैल २०१९ के अंक में पवन करण की है डॉ कविताएँ | सभी प्रेरक भावस्पंदा से युक्त |विनता नामक स्त्री आत्मकथन करती है कि पुरुषप्रदत्त वेदना से हीन जीवन ही स्वर्ग के समान है :

"मेरे लिए तो पुरुषप्रदत्त वेदना से रहित |स्त्री जीवन ही स्वर्ग के समान है" |

अमृत के पति देवताओं की आसक्ति देखकर यह बोध होता है कि अनिच्छा से दासी अप्सराएँ उनके कुकृत्यों में शामिल हो गई हैं |परंतु मौका पाकर किसी दिन विरोधस्वरूप स्वर्ग और उसके पैर से लुड़काकर अमृतघट को बहा देती हैं |विन्ध्यावली में यह स्पष्ट किया गया है

कि स्त्री का कहीं कोई भाग नहीं होता | सब पुरुष का ही भाग होता है | "स्त्री का कोई भाग नहीं होता कहीं | सब पुरुष भाग होता है राजपाट हो या यग्यभाग" |

रचना थी त्वष्टा की पत्नी | वह वृत्रासुर की माँ थी जो उसकी मृतदेह पर पड़ी रह गई थी | रचना में यह व्यक्त है | इंद्र ने उसके बेटे को मारा था | वह अत्यंत दुखी है, क्रोध में भी | उसका उदगार ध्यातव्य है : "भले ही सूर्य को आकाश में बिठाया हो तुमने मगर एक समय ऐसा भी आएगा, कि तुम्हारा नाम सदा के लिए डूब जाएगा अंधकार में" |

ययाति की दूसरी पत्नी शर्मीठा की वेदना, अतीत दंश शर्मिष्ठा में स्पष्ट है | ययाति शर्मिष्ठा से अंकशायीनी बनने के लिए जब चिरौरी कर रहा था, उसी समय

उसे देवयानी द्वारा दी गई पीड़ा की याद हो आई | उसी के बराबर ययाति के साथ बैठकर वह उसी पीड़ा का प्रतिकार करने लगी | 'मद्यंती' आज के नारी-विमर्श से हज़ार गुण अधिक प्रभावक और मारक है | मद्यंती कल्भाषपाद की पत्नी है | वह जिस ऋषि से शापित था (भोग में असमर्थ, संतानोत्पादन में अक्षम होने के लिए) उसके पास ही अपनी पत्नी को संतानवती होने के लिए भेज दिया | यहाँ उसकी व्यथा की कैसी अभिव्यक्ति है : "राजपाट के साथ-साथ भोगने के लिए हमें भी कमंडल में भरे घुमते हो तरह-तरह के शाप" |

स्त्री जाति के प्रति बर्बरता, शोषण का ज्वलंत प्रमाण | आज भले ही नारी-विमर्श प्रकर्ष पर हो, नाना आन्दोलन चल रहे हों पर नारी-शोषण आदिम युग से जारी है | जानवर और मनुष्य की तो बात ही क्या, देवकन्याएं भी शोषित, तापित और पीड़ित है | च्यवन ऋषि ने सुकन्या से भोग करने के लिए अपनी वृद्ध और जर्जर देह को चिर युवा बना

लिया | परंतु एनभोग के समय सुकन्या को उनकी झुर्रीभरी देह दिख जाती थी :

"युवा होकर भले ही कामदेव सरीखे/सुदर्शन देने लगे दिखाई/मगर जब भी क्रीडामगन होते हम/उनकी वे झुर्रियां जिन्हें उन्होंने/मेरे लिए त्याग दिया जलकुंड में/आ-आकर याद सताने लगती मुझे" |

नवनीत पांडे 'प्रेम का बहुवचन' में उन सीमाओं का उल्लेख करते हैं, जिन्हें वह नहीं लांघते तो कितना अच्छा होता यथा दोनों रह जाते अपरिचित | कोई किसी से कुछ नहीं कहता | वे अपनी लाइन नहीं तोड़ते, कोई किसी से नहीं भिड़ते | शब्दों के कोई अर्थ नहीं होते | अत: उन्हें सुनकर-पढकर सुखी-दुखी होने का प्रश्न ही नहीं उठता | उनमें पारस्परिक समझदारी ही नहीं होती जिससे वे दोषारोपण करते या फिर एक दुसरे पर हँसते | इससे तो बहतर होता कि वे बच्चे ही रहते | मनमुटाव, कटती क्षणिक होता फिर हो जाता मेलमिलाप | अंतिम और अमोध उपाय होता कि प्रेम का नहीं होता कोई बहुवचन :

"कितना अच्छा होता, प्रेम के बहुवचन नहीं होते/न मैं राह मटकता/न तुम मुझे ढूंढते फिरते" |

इतिहास के तोड़े-मरोड़े सत्य, तथ्य अनदेखे नहीं रहते | चित्र, कविता क्या विवशता का नाम है ? या फिर किसी उम्मीद या किसी सैलाब की शुरुआत की, यह प्रश्न बार-बार कुरेदता है | अनुभव करने पर भी भला क्या किया जा सकता है | यह प्रश्न सदा कालजयी रचनाकारों से पूछा जाता रहा है, भले ही उनका उत्तर मौन है | वायदा खान की कविता 'अनदेखा' का यही अभिप्राय है | 'मीत' कविता में दु:ख की हर पल साथ-साथ उपस्थिति का बोध है | उसका भय कभी हरी चिड़िया में व्यक्त होता था तो कभी गाती चिड़िया में | कारण रूदन का हँसना ही

है गान |बहेलियों के जाल में फंसा, बुझा चिड़िया का करूण गान पहली बार सुना था कवयित्री ने :

"छुप गया दुःख उन्हें जाती/साँसों पर/जो जुडी मुड़ी, रूंधी रुकी, चली/अनजान रातों में अनजान समयों में"|

पंवचनेश मिश्र 'वचनेश' १८५७-१९५९ ने शबरी के माध्यम से जातीयता का प्रत्याख्यान किया है और सिद्ध किया है की प्रेम-संबंध सदैव इन बंधनो से अपने को मुक्त रखता है |'भील की मोरी लली' वह शबरी है, जिसने फूलों से हास और ओस से आँसू टपकाया, पपीहा से एक रटन सीखी |वह भील की डाबरिया प्रेमरस में बावरी होकर अपनी लोनी लटें लटकाए, वन में प्रतीक्षकुल होकर दोल रही है |उस 'शबरी' काव्य की एक झांकी प्रस्तुत कर भक्ति प्रेम के प्रतिमान शबरी की याद आती है :

"जुग में शबरी जगदीश्वर को प्रतिबिम्ब मतंग मुनिसिंह जानति |

उठि प्रातही, झरिबुहारि कुटी, मखकी समिधेंवनते नित्यकृत्य सों पाय निचिंत तिन्हें, उपदेश सुधारस ले उर सानति"|

अनिता पांडे की 'विषपान' कविता का तात्पर्य है कि मनुष्य सदा अमृतपान ही करना चाहता है |विष की याद भी नहीं आती जब विष पाने के बाद ही अमृतपान का आनंद आता है |विष यानी विषमता, पराजय, निराशा, हताश को सहना, भोगना |एक बात ओर है ध्यानाकर्षक कि झूठे सुख को सुख कहकर भोगना जबकि काल का हाथ उसकी ओर बढ़ता जा रहा है :

"मिथ्या सुख से हो आनंदित/नहीं कर जाता वह सुधापान/मर जाता है जब हालाहल/दिशाहीन होता इंसान"|

इसीलिए सुधाबीज बोनेवाले को पहले कालकूट पीना पड़ता है | मस्तक पर आग का मुकुट धारण करना पड़ता है | विषमता, विपरीतता में जीना पड़ता है | ठीक कहा गया है :

'लेना अनल किरीट भालपर,
हो आशिक होने वाले,
कालकूट पहले पी लेना,
सुधाबीज बोनेवाले' |

मनुष्य जिस पात्र में खाता है, उसीमें छेद करता है | छायादार वृक्ष की डालें काटता है | खोदता है उसकी जड़ें | तनिक स्मरण नहीं आत्मा वृक्ष की उपकार वृत्ति का | इसे डॉ. सुरेश अवस्थी ने सम्यक अभिव्यक्ति दी है | बरगद की जड़ें खोदने के बजाये ये खुले में खुद को उगातें :

"अपनी जड़ें रोपने को/मन की शुद्धता का जल/महनत की खाद/योग्यता की हवा खोज लाते/तो खुद भी छाया देने के काबिल हो जाते" |

मनुष्य के दुःख का कारण है इच्छा की अनंतता | एक इच्छा पूरी नहीं हुई, दूसरी सामने आ गयी | फिर यह चक्र चलता रहा | मनुष्य उसमें उलझता गया | नाना कष्ट, कई समस्याएँ, उलझन, पर छ्ह कहाँ मिटती है | ओऊ वर्ष जीने की तमन्ना | फिर चाहे जो तनाव हो, समस्याएँ हों, सब झेलना पड़ता है :

"सौ बरस जीने की ख्वाहिश में/जरूरतों के खातिर भटकते हैं लोग/ख्वाहिश ही ख्वाहिश, में आदमी न जाने कितने तनाव झेलता है" |

कवि को यही प्रश्न मथता रहता है कि आखिर औरत में क्या विशेषता है, गुण है कि आकाश झिंझोड़नेवाला, समुद्र के सीने पर चलानेवाला और पहाड़ों को लाख-सा गलानेवाला, पुरुष किस प्रकार नारी के सामने झुक जाता है | उसके अनुरूप ढल जाता है | जिंदगी से सदा

बगावत करने वाला पुरुष अचानक कैसे वहां करने लगता है जिंदगी का जुआ |जिस प्रकार अनगढ़ पत्थर गंगा की धारा में गिरता, पड़ता, लुढ़कता शालग्राम बन जाता है, उसी प्रकार की सौम्य भावना, समरणशीलता, सेवा पुरुष को महान बना देती है :

"तुम्हारी आत्मगंगा में/निर्मल बनाती है / अनगढ़ पत्थर को शीलग्राम" |

पति-पत्नी के संबंध क्यों टूट-बिखर जाते हैं- यह प्रश्न सदा मथता रहता है |इसलिए कि न वहां राग है, न लगाव, न अपनापन |सिर्फ पत्नी से करवाना रहता है |फरमाइश पर फरमाइश |अपनी ओर से कोई पहल नहीं : "जब भावों से करने और करवाने में/सिर्फ करवाना ही आता हो/तो अप्रेम ही अप्रेम नज़र आता है" |

डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय की कविता 'तादात्म्य' में देश और देशवासी में तादात्म्य की कल्पना की गई है |ऐसा हो पाए तो कोई देशद्रोही सर उठाने की हिम्मत नहीं करे |देश और हम, जहाँ अलग-अलग होंगे, 'आप मरे तो जग डूबा' सार्थक होगा,
वही सारे दंगे, अनर्थ होंगे |इससे खबरदार किया गया है यहाँ |भाषा, धर्म, जाति के नाम पर भेद करना, विश्बोना और फिर उसका कुपरिणाम भोगना सब मनुष्य की मानसिकता पर निर्भर है |

मोहन कुमार डहेरिया की 'धन्यवाद ओ शब्द' विचारणीय है | ध्वन्यालोक में लिखा है कि जब शब्द नहीं फूटा था, चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार फैला था, शब्दागम जिस क्षण हुआ, उसी क्षण से चारों ओर प्रकाश झरने लगा |साड़ी चीज़ें एकदम स्पष्ट दिखाई देने लगीं | वर्षों तक एक ही दिशा में घुमते-घुमते पथरा गई थीं आँखें |एक ही धुन पर नाचते-नाचते जकड गये थे घुटने |वर्षों तक एक जोंक के चुंबन पाश में जकड़ा रहा |ऐसा कि जहाँ-जहाँ बच्चों, पत्नी के शरीर

पर हाथ रखा जाता, फफोलों से उनकी देह भर जाती थी | शब्दागम हुआ कि शब्दों ने किया उन्हें मुक्त | वे मुक्त हुए एक विस्फोटक जुनूनी चाल से | धुंआ-धुंआ जिंदगी से : "अब मैं इतना सहज, स्वाभाविक और सरल/ कि भौरों-सा घुमा सकते हैं बच्चे" |

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय का मानना है कि हम लोगों ने बहुत कुछ ले रखा है अपना जीवन चलाने के लिए | धरती से पुष्पगंध, जल से जिह्वा का रस, आग से ऊर्जा, गर्मी और प्रकाश, वायु से गति और शक्ति, आकाश से अनंतजीवी शब्द | मेरी अंतिम सांस के समय धरती, जल, आग सभी आएँगे कुछ लौटाकर पाने की प्रत्याशी में कि कितना-कितना बढाकर लौटाया जाता है | और अंत में आएगा आसमान यह कहने के लिए तमाचे-सा जड़ता एक प्रश्न : "मजबूरी में सब कुछ तो लौटा रहे हो/जीते जी कितने अभावों में रहे ? और अब क्या लौटाओगे ?" | मिथिलेश श्रीवास्तव 'जब सपनों की याद आई' में बताते है कि विकास का परिणाम यह है कि यह अपने नागरिकों को जिल्लत की ज़िन्दगी जीने के लिए मजबूर करती हैं | मोहन कुमार डहेरिया शब्दों को धन्यवाद देते हैं कि उसीने उन्हें मुक्त किया है | अब हवा का हो सकता है वहाँ प्रवेश | हवा खेल सकती है अब उनसे | एक ही दिशा में घूरते-घूरते पथरा गई आँखों और एकही धुन पर नाचते जबुदे गए घुटनों से मुक्त किया इन शब्दों ने | अत: उन्हें कवि धन्यवाद देता है | यह कवि अपना दु:ख किसी को देना नहीं चाहता | कारण, किसी को सौंपा गया तो मिट जाएगी उसकी मौलिकता | मिट जाएगा उसका वजूद | संघर्ष की क्षमता, जिल्लत, अपमान सहन करने का दमखम | सब समाप्त हो जाएँगे |

वरून कुमार तिवारी 'इस अवसाद पूर्ण स्थिति में' में वृद्धों की चिंताजनक स्थिति से आहात हैं |कारण, उनका नितांत अकेलापन, सुख-दुःख की बातें सुनने वाला, दुखी मन को सहलानेवाला कोई नहीं है |

"जर्जर शरीर/बूढी आँखों से झांकता अतीत/और झेलने का विवश/अनचाहा अकेलापन" |

व्हीलचेयर पर माँएँ: सुधीर मोता में माँओं के प्रति सकारात्मक रवैये की अभिव्यक्ति है |वहां उपेक्षा, बेगानेपन, तिरस्कार का भाव नहीं, अपनत्व, ममता की ऊष्मा है |वे जानती है कि इसके आगे कोई पड़ाव नहीं है |वे चलती हैं सारे नए जुड़ते पलों, रिश्तों और समारोहों में |कारण, उन्हें पता है कि उनके व्हील चेयर के चारों ओर घूमता है उनका पूरा कुनबा और माँ सारथी बन करती है सबका संचालन |देखती हैं उनके योगक्षेम |यह कवि नींद में भी संघर्ष कर रहा है |लड़ रहा है :

"क्षमा करना कलाकार/मैं सो नहीं रहा/लड़ रहा हूँ" |

विशाखा भुल्भुले की 'उम्र की देहरी पर धूप सेंकते हुए' में चार कविताएँ हैं- 'भाषा', 'याद में तेरी', 'जीवनसाथी', 'सिर्फ तुम हो मेरे चाँद' |भाषा के विविध अर्थों, सरोकारों, संबंधों को उकेरतीं है ये कविताएँ |

भाषा में वह जिन-जिन प्रसंगों, सन्दर्भों, स्थितियों से गुज़रती है, वैसी ही भाषा बनती जाती है |उसको अभिव्यक्ति का व्यापक आकाश देते हर | बाज़ार में मोलजोल की भाषा |बुजुर्गों से, पेश आती है अदब की भाषा में, सहेलियों संग नटखट भाषा में |जितने संदर्भ, जितने प्रसंग, जितनी स्थितियां, वैसी भाषा |भाषा का यह कमाल अभिव्यक्ति को बल देता है |पाठकों को सुकून |एक उदाहरण ध्यातव्य है :

"चलचित्र को देख छलक जाती है बरबस/नायिका से मिलती-जुलती/कभी नायिका कहती है उसके मन की भाषा/उम्र की देहरी पर धुप सेंकते हर/सुमिरन करती है कल कि भाषा" |

उसने जीवनसाथी को बड़ी आत्मीयता से स्मरण किया है |शिखर पर पहुँचकर जब उसने पुकारा तो वह समग्र राष्ट्र बन गई |उसे उसने दिया रोटी का सहारा |गिरकर बार-बार उठने के लिए प्राणवायु |बचत कर घर चलाने का मंत्र |हर बात यादकर वह कृतज्ञता से भर उठती है : "मेरी हर फ़तेह का राज तुम हो/मेरी हर शिखर पर गूँजती आवाज़ तुम हो" |

उसे उसका जीवन साथी चाँद नज़र आता है |वही उसके एकाकी आकाश में मुक्त विचरण करता है |उसके समुद्र सामान मन को कभी स्थिर कर देता है, कभी विचलित |सोलह वर्षों तक साथ रहकर उसने देखि हैं उसकी सोलह कलाएँ |

'काठ होने से इनकार है' : संतोष श्रीवास्तव कविता की पहली कविता है 'टूटे कांच में आकृतियाँ' |लाख सहेजकर, ध्यान देकर रखे जाते हैं काँच/स्वप्न भी सहेजने का होता है |भरपूर प्रयास पर दोनों एक दिन टूट ही जाते हैं |कारण उन्हें किसी-न-किसी कारण से टूटना है |सारे सपने हो जाएं साकार तो मनुष्य का अहंकार कितना हो जाए उद्धम |अत: कांच टूट, जाए या टूट जाएं सपने, देर तक इसका अहसास होता रहता है |इनकी 'ओस की जुबानी' कविता बहुत कुछ अनकहा कह जाती है :

"मोहब्बत में मान ही सबसे बड़ी राह है" |

मालिनी की कविता 'खाली को भरना ही उत्सव है' में तीन कविताएँ हैं 'दिवासौ' 'सुखी बनाम सुखी' 'खाली को भरना ही उत्सव है' |विविधधर्मी उत्सवों के ठीक सौ दिनों बाद दीवाली आएगी गाते-बजाते |मिटटी के सकोरों में जगमगाएगी |सौ-सौ सूरज को उसमें समाएगी |'खोली को भरना ही उत्सव है' में खाली होना भरती होने की शुरुआत है |अन्धकार की सत्ता ही प्रकाश की अगुवानी करती है |न हो अन्धकार तो फिर प्रकाश के लिए कोई व्याकुलता होती हैं |उतनी ही व्याकुलता क्या अन्धकार के लिए भी होती है |यों मूल सत्ता प्रकाश की है |अन्धकार तो उसकी रिक्तता का अहसास

कराती रहती है ताकि शिद्धत से प्रकाश लाया जा सके |'सुखी बनाम सूखी नदी' का अपना अलग दर्द है |वह कभी औरतों के कपड़े फींचने के काम आती थी |सुख की परिभाषा वक्त के अनुसार बदल जाती है |इस बदलने के होते हैं कई कारक |घात बदल गए वाशिंग मशीनों में |मेले समा गए डिजनी लेंड में |मंदिरों में जलते आस्था के दीपक बुझ गए |तब बदले भाग्य नदियों के कि वह सुख को भूलकर 'सूखी' कहलाने लगी |

रमेशचंद्र शाह की चार कविताएँ हैं 'दस्तावेज़' नाना क्रियाव्यापारों का प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं |जीवन जीने लायक रहा नहीं |कारण, मूल्यों का ह्रास होता रहा |अपनापन, आत्मीयता शेन:-शेन: खाने लगे अपना अर्थ | कवि को श्मशान में डंडा फटकारते, ख़बरदार कहते और अपनी ही ममता का गला घोंटते हरिश्चंद्र की बरबस याद आ जाती है |भाग्य की कैसी विडंबना है, कैसा विपर्यय है |

"उससे कहीं बेहतर था डंडा फटकारना मसान में/और देखना तारतार होते ममता की सच्चाई/सच्चाई की ममता" |

'पार' में अपने पथ पर चलने का आग्रह है |वही एक दिन गंतव्य तक पहुँचाएगा |बस चलना है |चलते रहना है और संसार का भार लिए हुए | यहाँ पलायन, निवृत्ति का मार्ग नहीं, जूझने और प्रवृत्ति को संयमित कर जीने का भाव है : "यही अपना पथ/इसीपर चले चलना/लिए अपना और जग का भार" |

इसी अंक में ओ० पी० झा की ग्यारह कविताएँ हैं |'नश्वरता और अमरता' |नश्वरता में अमरता की कल्पना वैसी ही है जैसे नन्हीं पंखुड़ियों पर बेखबर शबनम की बून्दें |आशंकाओं को दरकिनार करती हुई, रौशनी की गोद में मदहोश पड़ी हुई |वह सूखने से पहले है नश्वरता में अमरता की आशा |लो को जैसे लपक लेता है पतंग |किस प्रकार भ्रमर रात भर कमलकोरकों में बंद रह जाता है |यह है उसका पुष्प से गहरा लगाव |फूल,

भ्रमर और कविता के साथ एक अकेला कवि कर रहा है प्रतीक्षा आगामी कल की |एक मासूम शब्द में कवि शब्द-संधान करता रहता है कि कैसे पाले वह एक मासूम शब्द |मिल जाए वह शब्द तो बना लेगा, वह एक मासूम कविता |उसे यह चिंता भी सताती है कि मासूम शब्द अब विलीन होते जा रहे हैं |मिलते नहीं समय पर |फिर कैसे रची जाएगी कविता | कैसे बदलेगी दुनिया की तस्वीर |कवि की व्याकुलता बढ़ती जाती है |

कवि अकेलेपन की त्रासदी से ऊब जाता है तो लिखने लगता है कविता |नहीं होता यह अरण्यरोदन, न होता है यह ध्यानियों के महामौन की तरह |यह अस्फुट शब्दों में किसी मन्त्र की तरह प्रतीत होता है |फिर अनंत में बैठा देव अपनी अधखुली आँखों से देखने लगता है |पूरा संसार, जगत का व्यवहार मानों मृत्युंजय देख रहे हों सबकुछ |

"और अंतस में बैठा देव/अपनी अधखुली आँखों से/देखने लगता है पूरा संसार/मृत्युंजय की तरह" |

महानगरी सभ्यता की पगपगपर होती है निंदा, भर्तसना |वहां बंधुत्व की भावना हो गई तिरोहित |विष की प्यास यहाँ बंधू-शोणित से बुझाई जाती है |मानवता की पगपग पर हत्या, दानवता की विजय :

"दानवता की विजय पराजय मानवता की घोर अनय है
बात पराए की मत पूछो, हम हाय अपनों का भय है" |

हरिशंकर आदेश शहर से गाँव तक विषमता, शोषण और अन्याय ही देखते हैं |मान, मर्यादा, नैतिक मूल्य मिट रहे हैं और भ्रष्टाचार ने वहां पांव रोप दिए हैं |वेही देवतुल्य बन गए हैं |शहरों की ज़हरीली छाया गाँव को डंस रही है :

"भ्रष्टाचार बन बैठे हैं आज देवता तुली,
हंसती है गाँव को ज़हरीली छाव" |

धनंजय कुमार की यहाँ चार कविताएँ हैं- 'राहे', 'अधूरापन', 'आखिरी पेड़', और 'सोचता हूँ' | इनमें कवि सोचता रहा है कि मनुष्य के पतन, दिशाहीन और उसकी पराजय का आखिर सबब क्या है | प्रयत्न से मंजिल मिल जाए तो मार्ग स्वत: समाप्त हो जाएगा | आखिरी पेड़ में संभावनाएँ नज़र आती हैं | इसलिए कि प्रत्येक वर्ष जून के महीने में पता नहीं कहाँ से फूट आती है एक नन्हीं सी हरी-पीली अमिया |

नरेंद्र टंडन 'मौन' में हर विषम परिस्थिति में चुप रहने का संकेत देते हैं | इन परिस्थितियों में ईसा, मूसा भी हार जाते हैं तो हमारी भला क्या गति हो सकती है ? यदि बोलना अत्यंत आवश्यक हो जाए, बिना बोले रहा, सहा न जाए, तो खुलकर बोलना चाहिए | किसी को मदद देना एकदम ज़रूरी हो जाए तो आगे आना चाहिए :

> "बोलना हो गए ज़रूरी/तोलकर कुछ बोल दो/गर कोई मांगे मदद/तो अपनी झोली खोल दो" |

बस प्रेम ही: सुनीता जैन प्रेम की अनिवार्यता महत्ता, आवश्यकता प्रभाव-क्षमता पर भावपूर्ण अभिव्यक्ति है | 'प्रेम बिना जग सून' का भाव साकार करती है | 'जा घट विरह न संचारे, तो घट जान मसान' (कबीर) को अर्थ-विस्तार देती है : "किन्तु हरनाम का अनुवाद/हर भाषा, काल और/प्रांत में/होता है बस प्रेम ही" |

अशोक सिहं को चिंता है कि सबके मन में शंकाएं हैं, नफरत की आग है, स्वार्थपरता है | कोई ऐसा चित्र नहीं मिलता, जो अदावत कर दे दूर और पारस्परिकता और भाईचारा को बढ़ावा दे | प्रेम का पोषण, रक्षण करे :

> "सबके मन में शंकाएं हैं/नफरत और खुदगर्जी की/करें अदावत दूर सभी/किरदार नहीं कोई मिलता है" |

तुलसीदास ने प्रेम को ही राम को समझनेका एकमात्र उपाय बताया है :

> रामहि केवल प्रेम को ही पियारा/जानिलेहु जेहि जाननिहारा ||

परदे के पीछे : रमेश रंजक (संपादक डॉ. महेश उपाध्याय) के 'वक्तव्य गीत' से पता चलता है कि कवि में कितना सामाजिक सरोकार है |आम आदमी के लिए कितनी तड़प है, बेचैनी है |इसलिए वह आम आदमी के बारे में ही सोचता है |उसके खातिर बेचैन रहता है |मिहनत से नफरत करनेवाले, अपने हाथ को जगन्नाथ माननेवाले मजदूरों से इनका गहरा नाता है |इसी लिए वह मजदूर बनना चाहते है :

"जो जीता म्हणत के बल पर/उसकी इज्ज़त होती घर-घर/माँ तेरी सौगंध हमें, हम/मेहनतकश होकर उभरेंगे" |

गरीब का भूखा पेट कितना सहता है |कितना जूझता है |कितना जुल्म सहता है |इसकी कल्पना ही व्यथित कर देती है |चार साल भरी जवानी चुक गई |बुढापा पसर गया |आठ साल में खेत सब रहन में चला गया |फिर बीच आधी ज़िन्दगी, जिसे बेंचकर दमन के देवता की आरती कर रहा है |हवेली के वासियों का रवैया बड़ा घिनौना है |इतना घिनौना कि घृणा भी लजा जाए |बहु की देह, पित्री की लाज नीच हवेली सबको डंस जाती है |पेट सबसे बड़ा पापी है, वही सब कुछ करवाता है |वह कारणीय-अकारणीय, विहित-निषिद्ध का भेद मिटा देता है :

"देह बहु की लाज सुता की/डंस जाती जब नीच हवेली/आँख झुकाकर, सांस खींचकर/अब तक इस पेट ने झेली" |

दुष्यंत कुमार ने आग की सर्वत्र खोज की है |वह धधकती रहे सीने में सदा |इसी से मनुष्य का 'स्व' बचेगा :

"तेरे सीने में न सही, मेरे सीने में ही सही, हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए" |

आग की कितनी शिद्धत से ज़रुरत है कि सर्वत्र उसके बिना काम नहीं चलता |यथास्थिति जड़ता से वही टकराती है |नवीन न्याय की तलाश में यह आग निकल पड़ी है |सभी खामियाँ यही प्रकाश में ला रही है |लोक

लाज की राह बन गई है यह आग |समाज-सुधार की यही मांग है |सुराज का गाँधी स्वप्न यहीं साकार होगा :

"ये आग एक राह बन गई है लोकलाज की

ये आग एक माँग है समाज की, सुराज की"|

श्रीवास्तव का गीत 'बंधु अब चलता हूँ', भाई-चारा, सुजनता, सौमनस्य का भाव जगाता है |अतीत की ओर लौटकर कितना सुख, सुकून मिलता है- इसकी कल्पना से ही आनंद-विभोर हो जाता है :

"एक दूसरे को छूने कितने भागे |चलते रहे संग हम तुम पीछे आगे I कभी साल-डॉ-साल नहीं संवाद हुआ |मिले तो केवल दिल ही दिन आबाद हुआ"|

हर सैम-विषम, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति का जो करता है डटकर सामना, ज़िन्दगी उसी कको दुलारती है, प्यार करती है :

"हर बशर को इस तरह जीना सिखा जो

चल सके वो ज़िन्दगी में सर उठा के |

दस्तावेज़ (जनवरी-मार्च २०१९) में दिलीप पाटिल की पांच कविताएँ 'विवश', 'विस्फोटकों की जालियों से', 'भायान्र्य', 'हर एक के अंदर' और 'दिशाभूल' हैं |कवि का विशवास है कि हरेक के अंदर एक सागर उफनता रहता है पर लहरें किनारे तक नहीं आतीं |उसके अंदर एक पहाड़ अह्निंश जलता रहता है |परन्तु शोले आसमान तक नहीं उठते |हरेक के अंदर भरे होते हैं बादल, तूफ़ान पर वे प्रकट नहीं होते हैं | मनुष्य कितना सहता है और अपने धैर्य की परीक्षा देता है |मनुष्य की संवेदनशून्यता, हृदयहीनता का मारक बयान है कि मनुष्य किस प्रकार छल छद्म और मुखौटों में जीता है :

"देवराजे पर ही खड़े रहकर/चेहरे पर नकली मुस्कान लाकर/तुमने मेरा स्वागत किया"|

और मित्र अपना रोना कदाचित रोए, उसके पहले ही अपनी रुलाई का गीत गाना शुरू कर दिया |समय, समाज और मनुष्य का यह कैसा षड्यंत्र है, कैसी दुरमिसंधी है/मनुष्यता की पराजय का यह आलम किता करूनजनक है :

"दानवता की विजय, पराजय मानवता की/घोर अनय है/बात पराए की मत पूछो हमें हाय अपनों का भय है" |सिद्धेश की कविता 'लगभग ज़िन्दगी' में यही चिंता व्यक्त होती है कि ईश्वरीय चेतना और विश्वास में पड़े रही है निरंतर दीवार और बिगड़ रहे हैं संबंध |पापबोध से लिप्त मनुष्य कहाँ समझ पाता है अपनी दुर्दशा |

अनेकता में एकता सत्य की विशेषता है न कि हिंदी की विशेषता | सत्य की विजय गाथा उपनिषद में भी है- 'सत्यमेव जयते' |अशोक व्यास 'सत्य का गणित' में यह भाव त्यक्त करते हैं |सत्य का महत्त्व चिरंतन है |शाश्वत है चाहे वह किसी

काल, भूखंड में हो |कहा जाता है अनेकता में एकता, जो दरअसल हिंदी की विशेषता है, सत्य की विशेषता है |

३० जनवरी है महात्मा गांधी का निर्वाण दिवस |इस अवसर पर लिखी कविता तीस जनवरी बापू की याद स्मरणीय है |कवि का मानना है कि महात्मा गांधी ने चंपारण में निलहे खेतिहरों के लिए आन्दोलन किया |सत्याग्रह, आमरण अनशन किया |तृतीय श्रेणी में रेलयात्र की और पग-पग पर अंग्रेजों द्वारा अपमानित हुए |अछूतोद्धार किया | उन्हें हरिजनों की संज्ञा दी |परन्तु हम तो ऐसा कुछ नहीं कर पाते हैं |न दम है, न मन, न भाव |तब एक ही उपाय बचता है महात्मा की याद करने का कि उन्होंने जो कार्य किया, त्याग और बलिदान किया, उसका निरंतर स्मरण ही नहीं करें, उस दिशा में चलने का प्रयास करें

किया |कविता के अंतिम अंश को व्यक्त कर बापू को बार-बार नमन करता हूँ :

"परम वैभव के भव, भारत को भुविभर में उठाना है
इसी संकल्प के बल से, मुकुट हिम का सजाना है
यही सदेश लेकर में, अपना कर्म करता जो,
पुन: नभहिंद के उरमें सितारा टिमटिमाया है
मेरे बापू का समंदर लौट आया है" |

अपने वतन को याद करने का तरीका कितना भावनात्मक और प्रेरणापद है |मधु महेश्वरी पूर्वदीप्ति शैली में अपने पृथ्वी पर आनें उसके रग-रग से जुड़ने, पग-पग पर आनंदित, उपकृत होने की याद करते हैं |आकाश वही था, निर्लिप्त योगी-सा परन्तु मन का पक्षी दोनों छोरों पर उड़ता रहा |मन में स्वप्न कई थे |अरमान अनंत थे/पर मन सदा मात्रभूमि की ओर लगा रहा |विपरीतता, में भी उसे ही याद करता रहा :

"और जीवन पर जब छाया अवसाद/तो मन अमृत कण तुझसे पीता रहा/तुझसे दूर होकर भी/यूँ तेरे साथ जीता रहा" |

गगनांचल के इसी अंक में रमेश जोशी के अमेरिका की जीवन-शैली पर सात छद हैं |सब एक पर एक |वहां की सभ्यता, जीवन शैली, रहन-सहन, नाप-तोल आदि पर |वहाँ की अतिशय व्यस्तताभरी ज़िन्दगी का यह नज़ारा है |सब खाते है जंक फ़ूड |खाने की हो बात तो सब है |"एक सामान/जंक फ़ूड खाते सभी निर्धन और धनवान/निर्धन और धनवान, तभी है सबसे आगे/भागते भगते खाते, खाते

खाते भागे/कह जोशी कविराय जन्म है फिर-फिर पाना |एक जनम में काम, दूसरे में सुस्ताना" |

अंजना अधीर की कविता 'अमेरिका हड्डियों में जम जाता है', में वहाँ को बर्दाश्त करता हुआ मनुष्य जे रहा है |अपना अस्तित्व बचा रहा है |पेट के खातिर क्या-क्या नहीं करना पड़ता है मनुष्य को फिर भी वह घर, माँ, उसके भोजन को याद कर जी लेता है |माँ का कहना है कि भूल से भी अमेरिका को हड्डियों में बसने नहीं देना है चाहे वह कितनी ही सुविधाएँ क्यों न दें :

"तो अपने घर के खाने और माँ की रसोई याद करना/सुविधाओं में असुविधाएँ यद् रखना/यहीं से जाग जाना.....संस्कृत की मशाल जगाए रखना/अमेरिका को हड्डियों में मत बसने देना/अमेरिका सुविधाएँ देकर हड्डियों में जम जाता है" |

शिवराज छंगाणी कविता के गद्यात्मक, समीक्षत्मत, आलोचनात्मक होने पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं |कविता हृदयोद्गार है |भावनाओं का प्रहार है |संवेदना की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है न कि वह समालोचना और व्याख्या है |कविता के कवित्व के ह्रास और उसे गद्यमय होने की स्थिति से कवि आहात है |कविता के असली निहितार्थ को व्यक्त करता है कविता समग्र को समेटे हुए |दिव्य दृष्टि प्रदान करती है |औ सोच के अभिनव खोलती है |

कविता है सततप्रवाहिनी, प्रयागराज को संगम का दर्जा दिलाने वाली |गंगा-यमुना-सरस्वती का मेल करानेवाली | मेघ-गर्जन, बिजली का कौंधना, कद्कदाना, फिर बरसात की झड़ी लगा देना कविता ही करती है |सरसों के पीले खेत, रंगों की दृष्टि उडती हुई तितलियाँ यहीं दर्शाती है |गोपाल शरण सिंह नेपाली ने कहा था :

"कविता है कवि हृदय-क्षितिज में बालारूण का आना" |

वृन्द्धवर्ष जबसे मनाया जाने लगा, वृद्धों का भाग्य थोडा-थोडा जग गया |उनपर ध्यान दिया जाने लगा परन्तु यथार्थता से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है |समाज को दिखाने के लिए, सुर्ख़ियों में आने के लिए भले ही कुछ किया जाए पर सत्य कहाँ छिपा रहता है |एक दिन सामने आ ही जाता है |शिल्पी पचौरी का कहना वाजिब है :

"दुर्ग को देखने आए देशी-विदेशी सैलानी, पर बुज़ुर्ग को कोई नहीं देखता यह है हैरानी/बुज़ुर्ग रहे वृद्धाश्रमों में/यह है विपदा, और दुर्ग कहलाता राष्ट्रीय संपदा" |

इसी अंक में 'असलियत' कविता मूल्यपतन, मनुष्य की अधोवृत्ति, हरिद्रहीनता पर मारक प्रहार करती है |कैसी विडंबना है |कैसा विपर्यय है कि कुछ लोग खुश हैं गिरकर कि फिर उठेंगे और कुछ लोग गिरकर खुश हैं कि किसी का अहित तो कर दिया |किसी का झुकना, विनम्र होना भी इन्हें गिरने का बोध कराता है |

जिसका जैसा मन, वैसा व्याख्या |सूर्य के ताप से जल रही है धरती |चल रही है लू पर दूसरा कहता है कि धरती के अंदर से फूटती ज्वालामुखी रोड शो कर रही है |रैलियाँ हो रही हैं |जलती हुई बहसें लावा सी दूर-दूर तक फैली हैं |अविश्वास की बारूदी गंध उबलने लगी है |एक दूसरे की सूरत देखकर लोग सहज ही कह देते हैं यह चुनाव का महीना है |यह भाव है 'आत्मकथा: रामकिशोर मेहता' का |

मधुमती (उदयपुर, अगस्त २०१९) में कई कविताएँ हैं |अरूण देव की छह कविताएँ हैं यहाँ |जो नहीं है, अब मित्रता से अधिक शत्रुता पर बल देती है |मित्र अपने मृतक मित्रों को भले ही शनै:शनै: विस्मृति के गह्वर में डाला दें पर शत्रु को वह सदैव याद रखता है :

"शत्रुताएँ उसे कभी-कभी याद कर लेती हैं/कि अभी तो तमाम हिसाब बाकी है" |आज के परिप्रेक्ष्य में 'देशद्रोही' मर्म का स्पर्शकर हममें

हलचल मचा देती है | वे जलाते हैं | किताबें फाड़ते हैं, आज़ाद आवाजों को जला रहे हैं और शब्दों की निगरानी कर रहे हैं | वे नष्ट कर रहे हैं संस्थाओं को और शब्दों के मायने बदल रहे हैं |

वे सृजन कर नहीं पाते | परोपकार, परदु:खकातरता से वह कोसों दूर हैं | वे देशद्रोही हैं | उनके पास अतीत के लिए गालियाँ हैं | महापुरुषों के लिए/अपशब्द | उनके पास हैं छेनी और हथौड़ा और वे घूमघूमकर कर रहे हैं आदमकद मूर्तियाँ ध्वस्त वे दबाते हैं, आज़ाद आवाजों को और करते हैं शब्दों की निगरानी | संग्रहलयों को करते हैं नष्ट, भ्रष्ट संस्थाओं को तहस नहस | इस प्रकार ध्वंस, विनाश और नकार उनके खून में समाया है |

इस अंक में ओम नागर की दस कविताएँ हैं | दारूण अवस्था ऐसी आ गई है कि डूबने के लिए चुल्लू भर पानी नहीं मिलता | किसी के कमंडल में विध्वंस के लिए चुल्लूभर पानी नहीं है | बस बचा है आँख में इतना ही पानी कि वह डबडबा पाए |

इनकी सभी कविताएँ रमाती हैं | हर्षाती हैं | प्रेरित करती हैं | शब्द की सार्थकता इतनी कि वह हमारी आँखें खोलवाकर सब कुछ साफ़-साफ़ बताती चलती है | नल से पानी की बूदों का टपकना सबसे कर्कस | ऊंचे पहाड़ से नीचे गिरता हुआ झरना सबसे मनोरम | कलकल कर बहना एक नदी का सबसे सुंदर

लगता है और सबसे है प्यास लिए हुए कुँए की सबसे दुर्गम सीढ़ियाँ चढ़ना | उनके लिए पानी के सिवा सब कुछ आसान है |

मनुष्य की अतिशय व्यस्तता ने अनचाही सूचनाओं पर ध्यान देना बंद कर दिया है | सूचनाओं की अनंतता ने उनके प्रति विकर्षण पैदा

कर दिया है |किसी की मृत्यु की सूचना भी न चौकाती है, न दुखी करती है |बधाई शुभकामनाएँ, संदेश अब महज़ ओपचारिक हैं |कोई अहमियत नहीं रखते |मनुष्य की हृदयहीनता पर दुष्यंत कुमार की दो पंक्तियाँ यहाँ ध्यातव्य हैं :

"वो कोई वारात हो या कि वारदात/अब किसी भी बात पै खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ |

ओम नागर की दस कविताएँ हैं जल पर |कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है :

"इतिहास में इंसान की बसावट/और उजाड़/दोनों पानी के बदौलत" |

वैसे कई कविताएँ हैं, उनपर विचार-विमर्श वांछनीय है पर अपनी सीमा की पहचान भी होनी चाहिए |इन पंक्तियों से वाणी को विराम-"रास्ते में सफ़र के दौरान/फर्क रखना/मत उलझना/दहलीज के दुखों में/लेकिन बनाए रखना विश्वास/अपनी चाल में" |

सन्दर्भ :-

1. इसी से बचा जीवन: राकेश रेणु, लोकमित्र, 1/6588, पूर्वी रोहतासनगर, शाहदरा, दिल्ली-110032।
2. महेश आलोक की कविताएँ, समकालीन भारतीय साहित्य, जुलाई-अगस्त २०१९ ।
3. सुलभ इण्डिया, फरवरी २०१९, श्रीकांत चौदरी की कविता 'आत्मा की पुकार', पृ. 41।
4. शब्द सरोकार, जनवरी-मार्च २०१९, पृ. 23।
5. उपरिवत् में डॉ.जसवीर चावला की दो कविताएँ, पृ. 70।
6. कथाविन्ब, अप्रैल-जून २०१९, मुंबई, पृ. 46।
7. गगनांचल, जनवरी-अप्रैल २०१९, पृ. 50।
8. उपरिवत्, पृ. 177।
9. नया ज्ञानोदय, जनवरी २०१९, 'पहाड़ की एक मृतात्मा के लिए', पृ. 48।

10.मधुमती, उदयपुर (राजस्थान), मई २०१९, पृ. 86-89, लीलाधर जन्गुदी की कविताएँ ।

11.राजकुमार कुंभज की तीन कविताएँ, उपरिवत्, पृ. 93।

12.चन्द्रकुमार की पांच कविताएँ, मधुमती, मई २०१९, पृ. 101।

13.पवन करण की दस कविताएँ, मधुमती, अप्रैल २०१९ ।

14.उपरिवत्, पृ. 94।

15.सुकन्या, मधुमती, अप्रैल २०१९, पृ. 96।

16.प्रेम का बहुवचन: नवनीत पाण्डेय, मधुमती, अप्रैल २०१९, पृ. 101।

17.नया ज्ञानोदय, जनवरी २०१९, वाजदाखान की पांच कविताएँ, पृ. 52-53।

18.उपरिवत् की 'मीत' कविता ।

19.नवनिकष, कानपुर, अक्टूबर २०१९ में 'परिचय: कवि वचनेश', प्रस्तुति डॉ. प्रमिला अवस्थी, पृ. 45 |

20.उपरिवत्, विषपान डॉ. अनीता पंडा, पृ. 30 |

21.महाधीश बरगद, डॉ. सुरेश अवस्थी, नवनिकष, अक्टूबर २०१९, पृ. 40 |

22.नवनिकष, कानपुर, अक्टूबर २०१९, पृ. 53 |

23.हिन्दुस्तानी जबान, जुलाई-सितंबर २०१९ में 'औरत' ज्ञानप्रकाश पीयूष |

24.उपरिवत् में 'अजनबी : प्रगतिगुप्त', जुलाई-सितंबर २०१९, पृ. 69 |

25.कथाबिंब, जनवरी-मार्च २०१९, पृ. 42 |

26.समकालीन भारतीय साहित्य, नई दिल्ली, जुलाई-अगस्त २०१९, पृ. 44 |

27.उपरिवत्, 'लौटने का क्षण', राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय |

28.उपरिवत् मिथिलेश श्रीवास्तव की कविता और 'जब सपनों की याद आई', पृ. 49 |

29.'धन्यवाद, ओ शब्द', मोहन कुमार डहेरिया, समकालीन भारतीय साहित्य, जून-अगस्त २०१९, पृ. 44 |

30.उपरिवत् में वरुण कुमार तिवारी की कविता 'इस अवसाद पूर्ण स्थिति में', पृ. 52 |

31.सामयिक सरस्वती जून-सितंबर २०१९, पृ. 83-84 |

32.'टूटे कांच में आकृतियाँ', 'ओस की जुबानी', उपरिवत्, पृ. 85 |

33.'खोली को भरना ही उत्सव है', मालिनी गौतम, सामयिक सरस्वती, जुलाई-सितंबर २०१९ में 'दिवासौ सूखी बनाम सूखी', 'खाली को भरना ही उत्सव है' |

34.दस्तावेज़, जनवरी-मार्च २०१९ में रमेशचंद्र शाह की कविता 'युगांत' |

35.उपरिवत् पार, पृ. 37 |

36.उपरिवत् पृ. 37 |

37.बहुरंगी संसार : ओ० पी० झा, दस्तावेज, जनवरी-मार्च २०१९, पृ. 40 |

38.गगनांचल, जनवरी-मार्च २०१९ |

39.रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास |

40.परदे के पीछे : रमेश रंजक, उद्भावना प्रकाशन, गाज़ियाबाद |

41. गगनांचल, जनवरी-अप्रैल २०१९, पृ. 164 |

42.उपरिवत् में अंजना अधीर की कविता, 'अमेरिका हड्डियों में बस जाता है', पृ. 171 |

43.नवनिकष, कानपुर, अगस्त २०१९ |

44.उपरिवत् 'आत्मकथा', राम किशोर मेहता, पृ. 46 |

45.मधुमती, जुलाई २०१९, उदयपुर |

46.ओमनागर की दस कविताएँ, मधुमती, उदयपुर, जुलाई २०१९, पृ. 99

47.अमरजीत घुम्मण, जनपथ, अप्रैल-जून २०१९, पृ. 64 |